E-ISSN: 2583-9667
Indexed Journal
Peer Reviewed Journal
https://multiresearchjournal.theviews.in

Received: 06-05-2024
Accepted: 19-06-2024

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCE RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY

Volume 2; Issue 3; 2024; Page No. 427-430

चित्रकार दिलीप दास गुप्ता का रचना संसार

डॉ. देवेन्द्र कुमार त्रिपाठी

ओम गायत्री नगर, चांदपुर सलोरी, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: डॉ. देवेन्द्र कुमार त्रिपाठी

सारांश

भारतीय समकालीन कला के विकास में किसी एक कलाकार या किसी एक घटना से जोड़कर नही देखा जा सकता। चित्रकार अपने रचना संसार से सभी को अवगत कराता है। भारतीय समकालीन कला में नवीनतम दृष्टिकोण, विचारधाराएँ स्वरूप ग्रहण करती है। कलाकार अपनी कल्पना शक्ति द्वारा नवीन सोच एवं विचार से आकारों को संरचना करता है। कलाकार आन्तरिक अनुभूति से अन्वेषण कर कलाकृतियों का निर्माण करता है एवं कलाकार का विशाल कार्य मानव रूपी तत्वों के बजाय प्रकृति से प्रेरित रूपों, स्थान, सतह, शून्य में उसकी रूचि को रेखांकित करता है।
दिलीप दास गुप्ता भारत के अग्रणी चित्रकारों में जाने जाते है उनके मूर्त व अमूर्त चित्रों को आधुनिक भारतीय कला के एक महत्वपूर्ण कडी के रूप में देखा जाता है। इनकी चित्रकृतियों में भारतीय जन मानस से जुड़े सामाजिक मनोभावों का सम्मिश्रण स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है।

मूल शब्दः समकालीन कला, दिलीप दास गुप्ता, रंग तकनीक, तैल रंग, दृश्यचित्र आदि।

प्रस्तावना

सुप्रसिद्व चित्रकार' दिलीप दास गुप्ता' उन चित्रकारों में से एक है जिन्होने प्रकृति को अपने चित्रों की विषय वस्तु को बनाया है एवं प्राकृतिक रूपों की अपनी मौलिक अभिव्यक्ति से समकालीन कला में एक नयी पहचान दी। उन्होने ऐसे परिदृश्य की रचना की जो प्रकृति के प्रति उनकी सराहना को दर्शाते हैं। रंगों में उनका मनपसन्द माध्यम तैल वा जल रंग रहा। उन्होने मुख्य रूप से तैल रंगों के साथ प्रयोग किया। दिलीप दास गुप्ता कें चित्रों में सतही बुनावट, परिवर्तन और उज्जवलता का उपयोग किया। उनकी रंग योजनाएं, बदलती आकृतियां बमुश्किल में दिखाई देने वाले रूपों के साथ उनके परिदृश्य को जीवंत बनाती हैं।

आपके चित्र कैनवास पर रंगों को खास सम्मोहन के साथ दर्शाते हैं, चित्रों में रंगो के विभिन्न आयाम, इनके चित्र मन की परतों पर छपे प्रकृति के बिम्ब एक साथ खुलते हुए दिखाई देते हैं। उन्होने रंगो के ठोसपन अपारदर्शी, पारदर्शी और तरलता आदि गुणों को अपने चित्रों में आवश्यकतानुसार व्यवस्थित किया है।

दिलीप दास गुप्ता वाराणसी के एक प्रतिष्ठित समकालीन कलाकार के रूप में विख्यात रहे हैं। इनका जन्म 1931 में शिमला में हुआ था। चित्रकला के क्षेत्र में आपका आना एक संयोग था। स्कूली शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात फुटबाल खिलाडी के रूप में आप अपना कैरियर बनाना चाहते थे लेकिन इनका पारिवारिक महौल कलात्मक था, इनके भाई चित्रकार विमलदास गुप्ता चित्रकार के रूप में विख्यात हो रहे थे। विमलदास गुप्ता के अनुसरण में दिलीपदास गुप्ता कला की औपचाारिक शिक्षा दिल्ली पॉलिटेक्निक, नई दिल्ली में 1958 में पूर्ण हुई, इसके बाद ये विज्ञापन ऐजेन्सी में चित्रकार के रूप में काम करने लगे। इसी के साथ साथ जल रंग माध्यम से चित्रण व स्कैच भी बनाते रहे। शीघ्र ही आपने तैल रंग माध्यम से प्रभावित होकर तैल चित्रण के साथ नवीन प्रयोग करने प्रारम्भ कर दिए। धीरे धीरे तैल व जल रंग उनके प्रिय चित्रण माध्यम बन की उभरे। नवीन प्रयोगों के साथ साथ उनके चित्र अमूर्त रूप लेते चले गए।

आपनें प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ–साथ भारतीय ग्रामीण परिवेश के विविध आयामों को आकर्षक रूप में उकेरा, आप अपने भाई प्रसिद्व चित्रकार विमलदास गुप्ता की भॉति प्राकृतिक सौन्दर्य के उपासक रहे। प्रकृति का प्रभाव दिलीप दास गुप्ता पर भी पड़ा। प्रकृति के चारो ओर बिखरा हुआ सौन्दर्य किसी भी कलाकार की प्रेरणा बन सकती है, जो दिलीप दास गुप्ता के चित्रो पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। 1962 में आई फैक्स, नई दिल्ली द्वारा आपको सर्वश्रेष्ठ जल रंग लैण्डस्केप चित्रण के लिए सम्मानित किया गया एवं राष्ट्रपति के रजक पत्र से सम्मानित किया गया।[1]

1963–64 में आपनें यूरोप की यात्रायें कीं, वहॉ की कलात्मक अभिव्यक्तियों को देखकर आपकी कला में और अधिक परिपक्वता की आयी। 1966 में आपको राष्ट्रीय पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुआ एवं आपके चित्र अनेक कला प्रदर्शनियों में प्रदर्शित वा सम्मानित होते रहे। ललित कला अकादमी और पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के संयुक्त तत्वाधान में आपको डेलीगेट के रूप में हिमालय के लाहौल स्पीति क्षेत्र में भ्रमण करने का अवसर प्राप्त हुआ, जहॉ के प्राकृतिक सौन्दर्य व बौद्ध मठों नें उन्हे मोहित किया और इन्होनें यहॉ के दृश्यचित्रों को विशिष्ट रंग योजनाओं के साथ प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया।

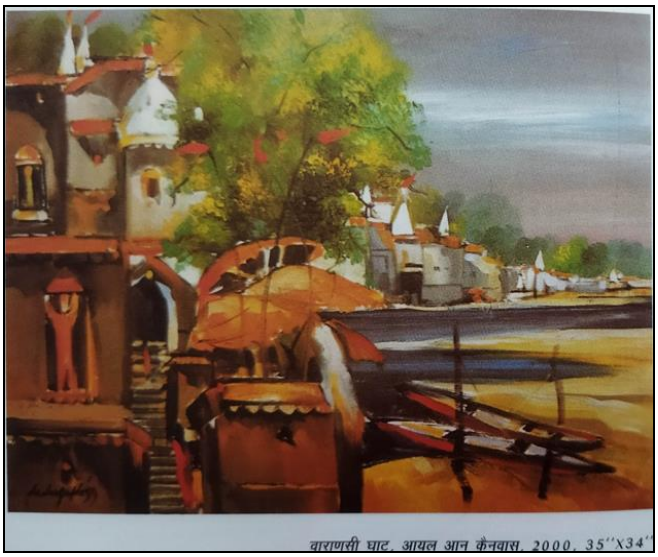

1967 मे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के ललित कला विभाग में प्रवक्ता पद पर आपकी नियुक्ति हुयी, जहॉ उन्होने प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ वाराणसी के जन जीवन को अपने कैनवास पर उकेरा जिससे आप दृश्यचित्रकार के रूप में विख्यात हुए। एक अच्छे कला शिक्षक के रूप में भी इन्हे प्रर्याप्त सम्मान मिला। कला शिक्षण में उनकी गहरी दिल चस्पी के कारण भी आपनें दृश्यकला संकाय में अध्यापन किया। उनके चित्रों में प्रायः चटख आभा के साथ गहरी तानो के रंग भी दिखाई पड़ते हैं। रंगो का तानीय अन्तर दर्शक की ऑख को बरबस ही सम्मोहित कर लेता है। गहरे रंगो में झांकती रंगो की उजली परते बादलो के बीच इन्द्रधनुष जैसा जगमगाती हैं।[2]

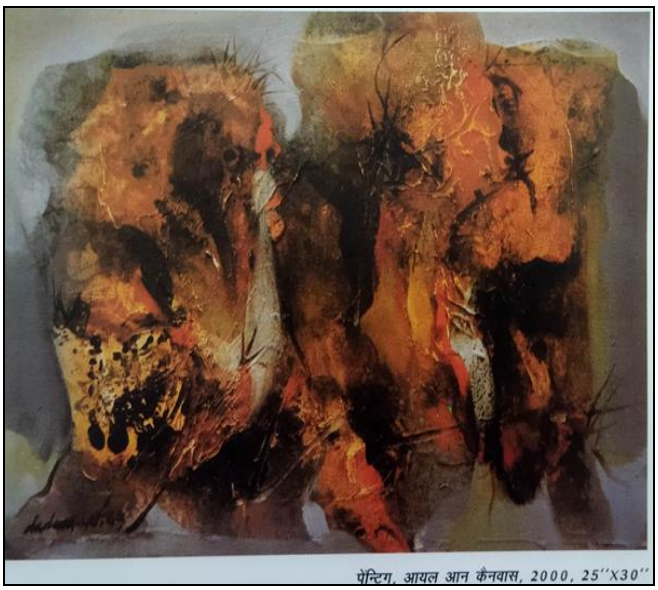

आपनें जल रंगों में प्राकृतिक दृश्यो का बहुत ही सुन्दर अंकन किया, अपने चित्रांकन में आपनें प्रकृति पर विशेष बल दिया है। पेड़, पौधे, आकाश, बादल पानी, वनस्पतियों आदि का चित्रण मूर्त व अमूर्त दोनो रूपों में किया गया है। इनके चित्रों में प्राकृतिक काव्य के दर्शन होते है, चित्रों में पारदर्शी रंग छायाओं का उपयोग आपनें अत्यन्त समीचीन ढंग से किया है। दिलीप दास गुप्ता के चित्रों में प्रयोधार्मिता के विविध आयाम देखने को मिलते हैं जिन्हें शब्दों में कहना कठिन है।

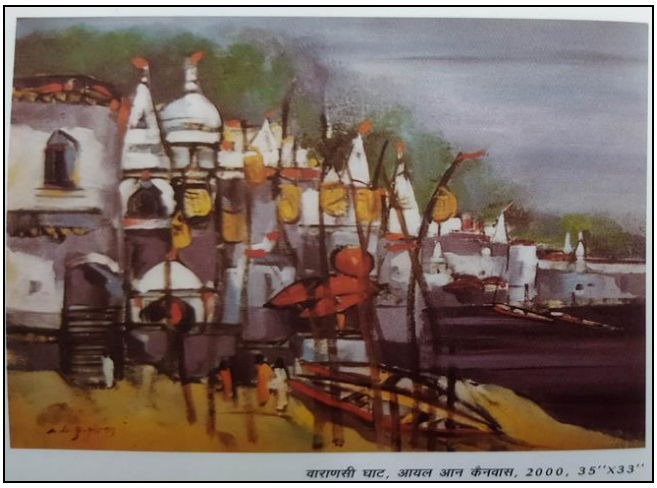

अपने तैल रंगो के चित्रो में आपनें टैक्सचर्स को अनेक विधियों में संजोया है। रंगो को कई परतो में लगाकर नीचे की परतो के प्रभाव लेते हूए, रंगो को घिसकर पारदर्शक रूप में लगाकर, खुरचकर, रंगो को फाडकर आदि अनेक तरह के प्रयोग एक ही चित्र में देखने को मिल जाते हैं।[3]

प्राकृतिक दृश्यो से प्रभावित होकर आपनें अनेक सुन्दर दृश्यो का निर्माण किया। उन्होने यद्यपि इन्होंने अपने समकालीन चित्रकारों की भॉति अभिव्यक्ति के लिए विभिन्न माध्यमों की खोज नही की, किन्तु आपने अपने तकनीक व रंगो तथा तूलिकाघातों द्वारा चित्रों की एक नई दुनिया की रचना की। अपने चित्रों में आप न तो कभी आक्रामक हुये और न आवश्यक रूप से मुखर।

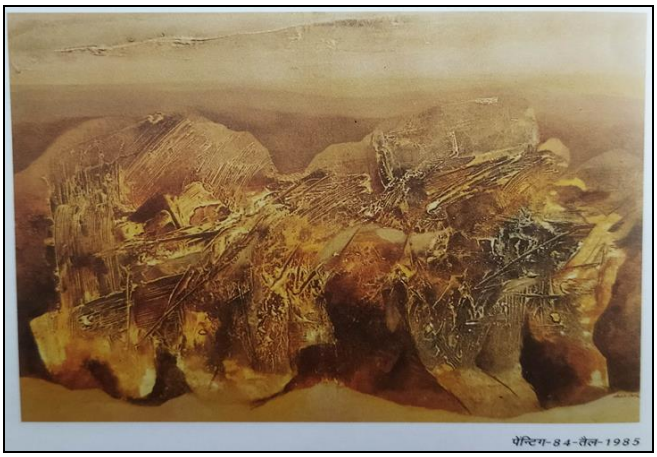

वाराणसी श्रंखला में वहा के लोग घाट, नावें, गंगा, बडी–बडी अट्टालिकाये, सीढीयां आदि समूचे वातावरण में रंगो का अद्वितीय समिश्रण देखने को मिलता है। उनके अमूर्त चित्रो में छोटे बडे आकार के कैनवास पर रंगो की ताकत और ब्रश की तूलिकाघात् प्रभावपूर्ण हैं जिन बडे क्षेत्रों को उन्होने छोट–छोटे चित्रो में विभाजित किया है वे उनकी कल्पना और तकनीक के अधिक निकट प्रतीत होते हैं। उनके चित्रो में मूर्त का ठोसपन और टेक्सचर की मौलिकता दिखाई पड़ती है। वे सदैव नवीन प्रयोगों की ओर जगरूक रहे, आपके चित्रों में फलक आकृति में बंधे हुए रूप नही है, अपितु वे निराकार ब्रहम के संवाहक की अनुभूति कराते है। आपने कला को मात्र आकस्मिक अध्ययन का विषय न मान कर अभिव्यक्ति में पूर्णता व प्रयोगवादी स्वरूप को स्वीकारा है। आपनें रंगो का प्रयोग एक प्रभाववादी कलाकार के रूप में खुलकर प्रयोग किया, आपके चित्रों में गहरे नीले, पीले, भूरे, लाल रगों का असाधारण ढंग से प्रयोग दिखाई पड़ता है इनके आधुनिकतम चित्रों में रंग उनकी अमूर्त कला की भाषा बन गयी है। आपका जीवन प्रकृति के समान सौम्य है एवं आप एकान्त और शान्तिमय जीवन प्रकृति के पक्षधर थे इसीलिए आपने अपने स्टूडियो में एकान्त जीवन को कैनवास पर मूर्तिमान किया है। उनके द्वारा बनाये प्रकृति चित्रण में रंगो का एक अद्भुत समन्वय है। आप अपने स्वभाव के अनरूप कोमल रंगो का प्रयोग करते हैं और धूमिल रंग लमाते है। वे रगों का नियोजन अपनी मनः स्थिति के अनुरूप करते हैं जिसके फलस्वरूप चित्रों में प्रयोगधार्मिता का नवीन रूप दिखाई देता है।

दिलीपदास गुप्ता का नाम देश के उन मूर्धन्य कलाकारों में लिया जाता है जिन्होने कला की विशिष्ट शैली का प्रतिपादन किया, इनके चित्रों में आकृतियों को अंकित करने का अपनी निजी ढग रंग व प्रतीकात्मक रूप विद्यमान है। उनके रंगाकारो की रचनात्मक उजा सदैव बरकरार रही है। रंगो के चयन में उनकी गहरी परम्परा चेतना से ही प्रेरित रही है और यही परम्परा चेतना उनके फलक अर्थ को पूरी तरह से दर्शकों तक सम्प्रेषित कर पाने में एक सेतु का कार्य करती है। उन्होने अधिकतर रंगों के संदर्भ में ही चित्रों की परिकल्पना की। उनके चित्रों को वैभव पूर्ण वातावरण इन्द्र धनुषी, रंग व प्रकृति के प्रति नैसर्गिक लगाव तथा रहस्यवादी अभिलाषाओं का सुखद संयोग उनके चित्रों में मिलता है।

निस्सन्देह उन्होने अपनी रंग संवेदना भारतीय परम्परा के आधार पर विकसित की है जो कला रूपों में अतिसुक्ष्म तथा बेहद चटकीले रंग प्रस्तुत करती है। भारतीय सौन्दर्य शास्त्र में रूप शब्द का उपयोग ही रंग को दर्शाने के लिए हुआ है। आपके चित्रों में रग, पोत, तथा आकार का सुखद ताल मेल है साथ ही चित्रों में तकनीकी नवीनता और विषय की मौलिकता है।

दिलीप दास गुप्ता के चित्रो को देखकर उनकी निर्माण तकनीक का सही–सही विश्लेषण नही किया जा सकता है। आपके चित्रो के टैक्चरर्स में रहस्यमयता है। चित्र सतह पर कहीं खुरदरापन है, कहीं चिकनापन तो कहीं धुंधलापन। ये सभी संयोजन से जुडे हुए चलते जाते हैं जो दर्शक को सोचने के लिए मजबुर करता है। चित्रों में रंगो का माया जाल सा बधॉ हुआ प्रतीत होता है। कही रगों का बहाव तो कहीं रंगो के टेक्चर का उभारपन तो कहीं समुद्र के नीचे की आकृतियॉ आदि सभी प्रकृति के रहस्य को दर्शाती हैं। वही बनारस घाट श्रृंखला की आकृतियो में प्रकृति के सौन्दयमयी रूप को चित्रकार दिलीतदास गुप्ता ने अपने ढंग से प्रस्तुत कर वाराणसी के सांस्कृतिक वैभव को दर्शाया है। आपने बनारस के बहुत से दृष्यचित्र बनाये, इन चित्रों में बनारस की वास्तुकला, गंगाघाट की ओर ले जाती गलियों आदि को आपनें बनारस की सुन्दरता और भव्यता के साथ आत्मसात करते हुए प्रस्तुत किया है। चित्रों में प्रयुक्त रंग अत्यधिक सहजता लिए हुए हैं जो कि चित्र वातावरण के साथ एक सहज सम्वन्ध बनाते प्रतीत हो रहे हैं। बनारस के घाटो से आपका अंत तक गहरा लगाव रहा व इसी लगाव के कारण आपनें लगभग पॉच हजार से अधिक चित्रों का अंकन किया। चित्रण के प्रति आपके इसी समर्पण का सम्मान करते हुए वर्ष 1977 में उन्हे राज्य ललित कला अकादमी उ0 प्र0 के सदस्य के रूप में मनोनीत किया गया। सन 1978–79 में बिरला कला अकादमी, कोलकत्ता में निर्णायक के रूप में आमत्रित किया गया था। 1982–83 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा खैरागढ़ में विजिटिग फैलो के रूप में आमन्त्रित किया गया। इनके चित्रों की प्रदर्शनी देश–विदेश की प्रमुख कला वीथिकाओ के साथ चौथी ऐशियाई कला प्रदर्शनी सियोल, दक्षिण कोरिया, आदि जगह आयोजित की गई एवं अनेक राष्ट्रीय वा अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशालाओ में भी आमंत्रित होते रहे।

इस महान कलाकार की मुत्यु सन् 2006 में हो गयी जो भारतीय

कला जगत के लिए अपूर्णीय क्षति थी। इनके गतिशील कलाकर्म तथा भारतीय कला को नवीन आयाम एवं नई पहचान देने के लिए कला प्रेमी इन्हें सदैव याद करते रहेंगे।

निष्कर्ष:

भारतीय समकालीन कला में दिलीप दास गुप्ता की भूमिका सदैव सराहनीय रही है। उन्होने दृश्यचित्रण को प्रोत्साहन प्रदान किया साथ ही अपने चित्रों में नयी प्रवृत्तियो को अनदेखा भी नही किया, बल्कि नवीन प्रयोगो के साथ स्वयं तैल रंग वा जलरंगो में बोल्ड पैचेज के साथ सुन्दर बुनावट (टेक्सचर) सृजित करते हुए, प्रकृति के विविध रूपों के बहुत सारे संयोजन अंकित किए हैं। आपका योगदान केवल कलाकार के रूप में ही नहीं बल्कि एक कुशल शिक्षक के रूप में बहुत सारे युवा कलाकारों के लिए प्रेरणा श्रोत रहा है। आपकी कला सदैव मौलिक तत्वों से परिपूर्ण रही। आप अपने गतिशील कलाकर्म तथा समकालीन कला के नवीन चेतना प्रदान करने के लिए सदैव याद कियें जाते रहेंगे।

सन्द्रर्भ

1. nppi/www.geocities.ws/
2. रिट्रॉस्पेक्टिव कला प्रदर्शनी–2003, राज्य ललित कला अकादमी, उ0प्र0 लखनऊ–कैटलाग
3. रिट्रॉस्पेक्टिव कला प्रदर्शनी–2003, राज्यललित कला अकादमी, लखनऊ
4. nppt/www.geocities.w.s
5. oneer.com.tranelatl.goog
6. आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ– डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी–जयपूर
7. आधुनिक कला कोश, लेखक–विनोद भारद्वाज, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
8. भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, डॉ. रीता प्रताप (वैश्य), राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.